



कांग्रेस का संगठन क्यों चरमरा गया यू.पी. में, बिहार में?

इसका जवाब ढूंढने में ज्यादा मेहनत की जरूरत नहीं है, राजस्थान में नए जिलाध्यक्षों का चयन, इस पतन की कहानी समझने-समझाने के लिए पर्याप्त है

- रेणु मित्तल -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 25 नवंबर। के. सी. वेणुगोपाल के संरक्षण में और एआईसीसी प्रभारी रंधावा की सक्रिय भूमिका के साथ, राजस्थान कांग्रेस ने उस उदयपुर घोषणा पत्र को पूरी तरह नजरअंदाज़ कर दिया है, जिसे बड़े धूमधाम से इसलिए जारी किया गया था कि कांग्रेस पार्टी के कामकाज में सुधार लाने के लिए नई गाइडलाइंस लागू हों। जिले के अध्यक्षों की नियुक्ति में सभी नियमों और तय प्रक्रियाओं की अनदेखी की गई और पूरे काम को एक मज़ाक बना दिया गया। अजमेर ग्रामीण से विकास चौधरी, जो आरएसएस पृष्ठभूमि से आते हैं, उन्हें पार्टी में शामिल किया गया, विधानसभा चुनाव का टिकट दिया गया, वे विधायक बने और अब उन्हें जिला अध्यक्ष बना दिया गया है। चौधरी उन 12 विधायकों में से एक हैं, जिन्हें जिला अध्यक्ष बनाया गया है, किन्तु उदयपुर घोषणा में तय 5 साल की कूलिंग ऑफ़ अवधि का पालन किए बिना।

- उदाहरण के लिए, अजमेर में आरएसएस पृष्ठभूमि के विकास चौधरी को नया जिलाध्यक्ष बनाया है, कांग्रेस ने।
- चित्तौड़गढ़ में नया जिलाध्यक्ष उसे बनाया गया है, जिसे कांग्रेस से निष्काशित किया हुआ है तथा जिसकी विवादित पृष्ठभूमि पुलिस थानों के रिकॉर्ड में अच्छी तरह अंकित है।
- हनुमानगढ़ में, उस व्यक्ति को जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया है, जो अभी कुछ समय पूर्व तक आम आदमी पार्टी का पदाधिकारी था।
- नीम का थाना में, वह आदमी नया जिलाध्यक्ष बनाया गया है, जिसे सरकारी नौकरी से रिटायर हुए अभी एक साल भी नहीं हुआ।
- जहाँ तक, नए खून को बढ़ावा देने के प्रयास का सवाल है, डीडवाना में उसी आदमी को नया जिलाध्यक्ष घोषित किया गया है, जो आठ साल से जिलाध्यक्ष है। दौसा में भी उस आदमी को नया जिलाध्यक्ष बनाया गया है, जो 15 साल से जिलाध्यक्ष चला आ रहा है।
- ऐसी अजीबोगरीब नियुक्तियाँ, एक दो नहीं, कई हैं।
- इन कारनामों से क्या कांग्रेस संगठन की जड़ें मजबूत होंगी, राजस्थान में।
- साथ ही ऐसी कहानी, यू.पी., बिहार, मध्य प्रदेश में भी होती आई है। अतः, संगठन की जर्जर अवस्था समझना कोई कठिन काम नहीं है।

पर्यवेक्षकों की सलाह के खिलाफ प्रमोद सिसोदिया को जिला अध्यक्ष जाकर पीसीसी अध्यक्ष डोटासरा ने बनाया है। उन पर चित्तौड़गढ़ का

हिस्ट्रीशीटर होने का आरोप है और उन्हें (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मौसम विभाग ने कुछ सांत्वना दी दिल्ली निवासियों को

मौसम विभाग के अनुसार, इथोपिया में ज्वालामुखी फटने से उत्पन्न सल्फर डाइऑक्साइड व चट्टानों के पार्टिकल्स के बादल से दिल्ली पर न्यूनतम असर होगा, प्रदूषण की दृष्टि से

- श्रीनंद झा -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-
नई दिल्ली, 25 नवंबर। पहले से ही खतरनाक वायु गुणवत्ता के कारण सांस लेने में मुश्किल झेल रहे दिल्लीवासियों को सोमवार को एक और पर्यावरणीय चुनौती का सामना करना पड़ा, जो एक असामान्य कारण से आ खड़ी हुई है। इथियोपिया में हुए एक दुर्लभ ज्वालामुखी विस्फोट से उठे सल्फर डाइऑक्साइड और बारीक चट्टानी कणों से घरे घने राख के बादल रविवार रात दिल्ली तक पहुँच गए, जिससे यह आशंका बढ़ गई कि राजधानी के ए.क्यू.आई. लैवल पर खतरनाक असर पड़ सकता है। दिल्ली और आसपास के शहर बीते दिनों से जहरीली हवा से जूझ रहे हैं। मंगलवार को दिल्ली का ए.क्यू.आई.

- यह बादल इतनी ऊँचाई पर है कि वह गुजरात, राजस्थान होता हुआ, दिल्ली व पंजाब पहुँचेगा तथा चीन की ओर बड़ेगा, पर, उसका असर रास्ते में पड़ रहे शहर पर नहीं पड़ेगा। लेकिन, हवाई यात्राएँ जरूर प्रभावित होंगी।

382 दर्ज हुआ, जबकि गाजियाबाद में 396, नोएडा में 397 और ग्रेटर नोएडा में 382 रहा। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, ए.क्यू.आई. 400 से ऊपर “गंभीर” श्रेणी में आता है। दिल्ली में सरकारी ऑफिस और प्राइवेट संस्थान सोमवार को लागू किए गए स्टेज-3 ग्रेप के तहत 50 प्रतिशत कर्मचारियों के साथ काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के आदेश दिए गए हैं। प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव की

अध्यक्षता में हुई बैठक में चिंता जताई गई कि दिल्ली-एनसीआर में लगभग 37 प्रतिशत वाहन पुराने बी.एल.1 और बी.एस.3 उत्सर्जन मानकों का पालन करते हैं। अधिकारियों को इस पर तत्काल सख्त कदम उठाने के निर्देश दिए गए। दिल्लीवासियों के लिए थोड़ी राहत यह है कि मौसम विशेषज्ञों के अनुसार इथियोपिया की ज्वालामुखीय राख ऊपरी वायुमंडल में यात्रा कर रही है और इसका सतह के स्तर पर खास असर (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

लॉरेंस बिश्नोई के नाम की जैकेट बेचते तीन गिरफ्तार

जयपुर, 25 नवंबर। कोटपूतली पुलिस की टीम ने कस्बे में गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के नाम का महिमामंडन करने वाली वस्तुएं बेचने वाले लोगों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है।

कोटपुतली-बहरोड़ एसपी देवेन्द्र कुमार बिश्नोई ने बताया कि

- कोटपूतली पुलिस ने गैंगस्टर को महिमामंडित करने वालों के खिलाफ कार्यवाही की।

कोटपूतली के सिटी प्लाजा से लॉरेंस बिश्नोई के नाम का प्रचार करने वाली जैकेट बेचते हुए, कृष्ण उर्फ गुड्डू (38), संजय सैनी (31) और सुरेशचन्द शर्मा (50) को गिरफ्तार किया गया है। ये तीनों ही कोटपूतली क्षेत्र के निवासी हैं। इन गिरफ्तार आरोपितों के पास से 35 जैकेट जब्त की गई हैं।

बयान होने से पहले सरकारी गवाह बने आरोपी को जमानत नहीं

जयपुर, 25 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने मानव अंग तस्करी और किडनी प्रत्यारोपण से जुड़े एक मामले में कहा है कि सरकारी गवाह बने आरोपी को तब तक जमानत पर रिहा नहीं किया जा सकता, जब तक कि निचली अदालत में उसके बयान दर्ज नहीं हुए हों। इसके साथ ही, अदालत ने मामले

- हाई कोर्ट ने किडनी प्रत्यारोपण मामले में बाँग्लादेश निवासी नुरुल इस्लाम पर निर्देश दिए।

में निचली अदालत को कहा कि वह चार सप्ताह में आरोपियों पर चार्ज फ्रेम करने के संबंध में निर्णय ले। वहीं, चार्ज फ्रेम होने की स्थिति में सबसे पहले याचिकाकर्ताओं के बयान दर्ज करें। अदालत ने याचिकाकर्ताओं को छूट दी है कि वे निचली अदालत में बयान दर्ज होने के बाद हाईकोर्ट में जमानत याचिका पेश कर सकते हैं। जस्टिस अनूप कुमार की एकलपीठ ने ये आदेश बांग्लादेश निवासी नुरुल इस्लाम व एक अन्य की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए दिये। अदालत ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जल्दी सुनवाई का मौलिक अधिकार नागरिकों के साथ-साथ विदेशियों को भी प्राप्त है। अदालत ने कहा कि न्याय में देरी पीडित (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा महाराष्ट्र का अनुभव कर्नाटक में दोहराने को तैयार है

भाजपा के वरिष्ठ नेता अमित शाह आदि डी.के. शिवकुमार से संपर्क में हैं तथा अगर वे कांग्रेस छोड़कर, अपनी सरकार बनाना चाहते हैं तो भाजपा अपने 82 विधायकों के साथ, उस सरकार को बाहर से समर्थन दे देगी

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -
नई दिल्ली, 25 नवम्बर। कर्नाटक में सिद्धारमैया के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार एक बार फिर उथल-पुथल का सामना कर रही है, क्योंकि उपमुख्यमंत्री डोके शिवकुमार ने एक बार फिर मुख्यमंत्री पद पर अपना दावा पेश किया है। पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि यह दावा मई-जून 2023 में शिवकुमार और राहुल गांधी के बीच हुई एक सहमति से आया है, जिसके मुताबिक पांच साल के कार्यकाल को सिद्धारमैया और शिवकुमार के बीच बांटा जाना था।

पिछले हफ्तों में दोनों नेताओं ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड्गे और वरिष्ठ नेता राहुल गांधी से बैंगलुरु

- इस चर्चा ने जोर इसलिए पकड़ा, क्योंकि डी.के. शिवकुमार कुछ नाखुश से हैं कांग्रेस से, क्योंकि पुराने वादे के अनुसार, नवंबर से उनका मु.मंत्री बनने का वादा पूरा नहीं कर रहा, कांग्रेस का हाइकमान।

- कांग्रेस नये-नये बहाने ढूँढ रही है, शिवकुमार को मु.मंत्री न बनाने के लिए। नवीनमत बहाना यह है कि कांग्रेस हाइकमान शीघ्र शुरु होने वाले संसद के सत्र की तैयारी में व्यस्त हैं तथा सत्र के बाद कर्नाटक के मसले पर गहराई से विचार होगा।

और दिल्ली में अलग-अलग मीटिंग की है। लेकिन, कांग्रेस के शीर्ष सूत्रों का कहना है कि हाइकमान सिद्धारमैया को पूरा कार्यकाल देने के पक्ष में हैं। जून 2023 फिलहाल नेतृत्व परिवर्तन का कोई विचार नहीं है। तथापि, शिवकुमार पार्टी नेतृत्व को

नरम पड़ गये थे और उन्होंने गांधी की, “सही समय का इंतजार” करने की बात मान ली थी।

इस नई राजनीतिक हलचल के बीच, लगभग 25 कांग्रेस विधायक, जो शिवकुमार के करीबी माने जाते हैं, इन दिनों दिल्ली में डेरा डाले हुए हैं। कांग्रेस सूत्र इस घटनाक्रम को कम महत्व देते हुए कह रहे हैं कि ये विधायक नेतृत्व परिवर्तन के लिए दबाव नहीं डाल रहे, बल्कि लंबे समय से लंबित मंत्री पदों की मांग कर रहे हैं, जिस पर सन्निकट कैबिनेट विस्तार के समय विचार किया जा सकता है।

इसी बीच, भाजपा इस पूरे घटनाक्रम पर कड़ी नजर रखे हुए है। पिछले कुछ दिनों से पार्टी के भीतर राजनीतिक गतिविधियाँ तेज हुई हैं। (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नरम पड़ गये थे और उन्होंने गांधी की, “सही समय का इंतजार” करने की बात मान ली थी।

इस नई राजनीतिक हलचल के बीच, लगभग 25 कांग्रेस विधायक, जो शिवकुमार के करीबी माने जाते हैं, इन दिनों दिल्ली में डेरा डाले हुए हैं। कांग्रेस सूत्र इस घटनाक्रम को कम महत्व देते हुए कह रहे हैं कि ये विधायक नेतृत्व परिवर्तन के लिए दबाव नहीं डाल रहे, बल्कि लंबे समय से लंबित मंत्री पदों की मांग कर रहे हैं, जिस पर सन्निकट कैबिनेट विस्तार के समय विचार किया जा सकता है।

इसी बीच, भाजपा इस पूरे घटनाक्रम पर कड़ी नजर रखे हुए है। पिछले कुछ दिनों से पार्टी के भीतर राजनीतिक गतिविधियाँ तेज हुई हैं। (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिहार विधान सभा का पहला सत्र 1 दिसंबर से

पटना, 25 नवंबर। बिहार विधानसभा का पहला सत्र, हाल ही में संपन्न हुए चुनाव के बाद एक दिसंबर से प्रारंभ होगा।

बिहार विधानसभा सचिवालय के आधिकारिक सूत्रों के अनुसार,

- दूसरे दिन विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव होगा।

विधानसभा सत्र के पहले दिन नव-निर्वाचित विधायकों को प्रोटेम स्पीकर नरेंद्र नारायण यादव शपथ दिलायेंगे। पहले दिन की कार्यवाही के बाद 2 दिसंबर को विधानसभा के नये अध्यक्ष का चुनाव सदन के सदस्यों द्वारा किया जायेगा, जिसके बाद सदन नियमित रूप से कामकाज करना शुरू कर देगा।

इसके बाद 3 दिसंबर को बिहार के राज्यपाल अरिफ मोहम्मद खान, बिहार विधानमंडल के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करेंगे। राज्यपाल के अभिभाषण के बाद उसी दिन सरकार (शेष अंतिम पृष्ठ पर)